



भारत का राजपत्र The Gazette of India

असाधारण
EXTRAORDINARY

भाग II—खण्ड 3—उप-खण्ड (ii)
PART II—Section 3—Sub-Section (ii)

प्राधिकार से प्रकाशित
PUBLISHED BY AUTHORITY

सं. 719]
No. 719]

नई दिल्ली, रविवार, 31 दिसम्बर, 1995/पौष 10, 1917
NEW DELHI, SUNDAY, DECEMBER 31, 1995/PAUSA 10, 1917

वित्त मंत्रालय
(आर्थिक कार्य विभाग)
(वैकिंग प्रभाग)

अधिसूचना

नई दिल्ली, 31 दिसम्बर, 1995

का.आ. 1010 (अ).—केन्द्रीय सरकार ने, बैंककारी विनियमन अधिनियम, 1949 (1949 का 10) की धारा 45 की उपधारा (1) के अधीन भारतीय रिजर्व बैंक द्वारा आवेदन करने पर उक्त धारा की उपधारा (2) के अधीन काशीनाथ सेठ बैंक लिमिटेड, आहमदाबाद, उत्तर प्रदेश की वास्तव अधीस्थान आदेश किया है—

और भारतीय रिजर्व बैंक ने, ऐसे अधीस्थान की अवधि के दौरान अपना यह समाधान हो जाने पर कि कोकित और निक्षेपकर्ताओं के हित में ऐसा करना आवश्यक है; उक्त अधिनियम की धारा 45 की उपधारा

(4) द्वारा प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए, काशीनाथ सेठ बैंक लिमिटेड को भारतीय स्टेट बैंक में सम्मेलन करने के लिए एक स्कीम तैयार की है;

और भारतीय रिजर्व बैंक ने उक्त धारा की उपधारा (6) के उपबन्धों के अनुसार संबंधित बैंकों को उक्त स्कीम का प्रारूप भेजने के पश्चात् और उक्त स्कीम की बाबत प्राप्त सुझावों और आक्षेपों पर विचार करने के पश्चात् उक्त स्कीम को उपान्तरित किया है और उसे मंजूरी के लिए, केन्द्रीय सरकार को भेज दिया है;

अतः, अब केन्द्रीय सरकार उक्त अधिनियम की धारा 45 की उपधारा (7) द्वारा प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए इसमें इसके पश्चात् उल्लिखित निबंधन और शर्तों पर और उनके अधीन रहते हुए निम्नलिखित स्कीम को मंजूरी देती है।

अध्याय—1

अध्याय—2

प्रारम्भिक

1. संक्षिप्त नाम और प्रारम्भ (1) इस स्कीम का संक्षिप्त नाम काशीनाथ सेठ बैंक लिमिटेड (भारतीय स्टेट बैंक के साथ समामेलन) स्कीम, 1995 है।

(2) यह उस तारीख को प्रवृत्त होगी जिसे केन्द्रीय सरकार, राजपत्र में अधिसूचना द्वारा विनिर्दिष्ट करे।

2. परिभाषाएं इस स्कीम में, जब तक कि संदर्भ से अन्यथा अपेक्षित न हो—

(1) “अधिनियम” से बैंककारी विनियमन अधिनियम, 1949 (1949 का 10) अभिप्रेत है ;

(2) “आस्ति खाता” से वह काल्पनिक खाता अभिप्रेत है जो स्कीमों में यथा उपबंधित उक्त अंतरक बैंक की समय-समय पर दायित्वों को समायोजित करने के पश्चात् अधिशेष अथवा कमी का पता लगाने के लिए स्कीम के पैरा 5 के उप पैरा (2) के अनुसरण में खोला गया हो ;

(3) “संग्रहण खाता” से वह काल्पनिक खाता अभिप्रेत है जो आस्तियों और दायित्वों के समायोजन के पश्चात् अंतरबैंक के सदस्यों को वितरण के लिए उपलब्ध होने वाली रकम, यदि कोई हो, का पता लगाने के प्रयोजन के लिए स्कीम के पैरा 7 के अनुसरण में खोला गया हो ;

(4) ‘नियत तारीख’ से वह तारीख अभिप्रेत है जो केन्द्रीय सरकार पैरा 1 के उप पैरा (2) के अधीन विनिर्दिष्ट करे ;

(5) “स्कीम” से काशीनाथ सेठ बैंक लिमिटेड (भारतीय स्टेट बैंक के साथ समामेलन) स्कीम, 1995 अभिप्रेत है ;

(6) “अन्तरक बैंक” से काशीनाथ सेठ बैंक लिमिटेड शाहजहांपुर, उत्तर प्रदेश अभिप्रेत है ;

(7) “अन्तरिती बैंक” से भारतीय स्टेट बैंक अधिनियम 1995 की धारा 3 के अधीन गठित भारतीय स्टेट बैंक अभिप्रेत है ;

(8) उन शब्दों और पदों के जो इसमें प्रयुक्त हैं, और परिभाषित नहीं हैं, किन्तु अधिनियम में परिभाषित हैं, वहीं अर्थ होंगे जो उस अधिनियम में हैं।

कारदार संपत्तियों, आस्तियों और दायित्वों का अन्वेषण
3. आस्तियों और दायित्वों का अन्वेषण और उपाय साधरण प्रभाव :—

(1) विहित तारीख से, अंतरक बैंक सभी अधिकार आस्तियों, ऋण, मांगे, हित प्राधिकार, विशेषाधिकार फायदे आस्तियों और परिसंपत्तियां जंगल और स्थावर वस्तुओं में स्थित सम्मिलित है जो पूर्णतः की उक्त अनुपस्थिति और जिसे पट्टे द्वारा के अंतर्गत उन्हें धारित किया गया है, उसमें निहित विवादों की रकम तथा अन्य रकम और वस्तुओं के अधीन है तथा कारबार का तारी फर्नीचर, खुले रखे गए उपस्कर, संयंत्र साधन और साधन, बहियां, कागज, लेखन सामग्री का भंडार, अन्य भंडार और भंडारण स्टोका, जंगल (जंगलों) और प्रतिभूतियों द्वारा में भाग और संयंत्रों में सभी निग, हाथ में सभी मकदमी और चालू अथवा निरोध खात (जिसमें मांग पर या संक्षिप्त सूचना नगर धन सम्मिलित है) में समस्त मकदमी वस्तुओं बैंक का सोना, जांजी, सभी बहियां, ऋण, वंधक ऋण प्रतिभूति के फायदे सहित शान्त ऋण और बचकी गारंटी, यदि कोई हो, संपत्ति अधिकार और आस्तियां यदि कोई हो, अंतरक बैंक के कारदार के संग्रह में सभी गारंटियां इस स्कीम के अन्य उपबंधों के अधीन अंतरिती मानी जाएंगी तथा वे उक्त संपत्तियों और आस्तियां होंगी और निर्विवाद तारीख से अंतरक बैंक के सभी दायित्व शुल्क और उन्मोचन, यहाँ दी गई और अंतरिती बैंक के दायित्व शुल्क और दायित्व होंगी ;

(2) पूर्वगामी उपबंधों सामान्यतया पर प्रतिकूल प्रभाव डाले बिना सभी संविदाएं, विवेक वंधपत्र, करार मुस्तारनामें (पावर आफ एटार्नी) विधि प्रतिनिधित्व की मंजूरियां तथा अन्य लिखत वे किसी भी स्वरूप के हों अथवा नियत तारीख तुरन्त पहले प्रभावी हों, आगे बतलाई गई सीमा तक और दंग से अंतरिती बैंक के विरुद्ध या पक्ष में प्रभावी होंगे और उन पर इस तरह दायित्वों की जाएगी, आगे अंतरक बैंक के बजाय अंतरिती बैंक उसका एक पक्षकार हो अथवा आगे अंतरिती बैंक के पक्ष में जारी किए गए हों।

(3) यदि विहित तारीख को कोई वाद अपील अथवा किसी भी तरह की कोई अन्य विधिक प्रक्रिया अन्तरक बैंक के द्वारा या विरुद्ध कोई अन्य प्रक्रिया सम्बन्धित है जो उसे उपशमित या रोकता नहीं जाएगा या उसका किसी रूप में प्रतिकूल प्रभाव नहीं पड़ेगा किन्तु यह इस रकम के अन्य उपबंधों के अधीन रहते हुए अन्तरिती बैंक द्वारा या उसके विरुद्ध अवि-योजित की जाएगी और प्रवृत्त नहीं रहेगी।

(4) यदि भारत के बाहर किसी देश की विधि के अनुसार इस स्काम के उपबंध उमे देश में स्थित किसी आस्ति या दायित्वों जो अन्तरक बैंक के अन्तरिती बैंक के वचन का भाग हैं, के अन्तरण अथवा उमको निहित करने के लिए स्वयं प्रभाव में हों तो अन्तरिती बैंक का मुख्य कार्यपालक अधिकारी को सौंपे हुए माने जाएंगे और मुख्य कार्यपालक अधिकारी उसके परिचालन को बंद करने के प्रयोजन लिए सभी शक्तियों का उसी प्रकार प्रयोग करेगा जो कि वे अन्तरक बैंक द्वारा प्रयोग की गई हों। मुख्य कार्यपालक अधिकारी इस प्रकार के अन्तरण को प्रभावी बनाने के प्रयोजन के लिए ऐसे सभी कदम उठाएगा जो भारत के बाहर उस देश के कानून द्वारा अपेक्षित हों और उसके संबंध में मुख्य कार्यपालक अधिकारी या तो स्वयं अथवा उसके द्वारा इस निमित्त अधिकृत किसी अन्य व्यक्ति के माध्यम से अन्तरक बैंक की किसी भी आस्ति को वसूली करेगा अथवा उसकी दायित्वों का उन्मोचन करेगा और उसके शुद्ध आगामों को अन्तरिती बैंक को अन्तरित करेगा।

4. अन्तरक बैंक की बहियों को बंद करना और तुलनपत्र को तैयार करना :—

(1) अन्तरक बैंक की बहियों को बंद किया जाएगा और 30 जून, 1995 को कारबार या उसके पश्चात् कारबार के बंद होने पर, प्रथम दृष्टांत रूप में उसका तुलन किया जाएगा और तुलन पत्र तैयार किया जाएगा तथा तुलन पत्र, चार्टर्ड एकाउन्टेंट या इस प्रयोजन के लिए भारतीय रिजर्व बैंक द्वारा अनुमोदित या नामित चार्टर्ड एकाउन्टेंट की फर्म द्वारा संपरिक्षित और प्रमाणित किया जाएगा।

(2) पूर्वगामों पैरा के उपबंधों के अनुसार तैयार की गई अन्तरक बैंक के तुलन पत्र की एक प्रति अन्तरक बैंक के तुलनपत्र प्राप्त होने

के पश्चात् यथाशीघ्र अन्तरक बैंक द्वारा कम्पनी रजिस्ट्रार के पास फाइल की जाएगी और यथाशीघ्र इसके प्राप्त होने के पश्चात् अन्तरक बैंक का तुलनपत्र या लाभ और हानि खातों अथवा उसके सदस्यों को प्रस्तुत करने अथवा कम्पनी रजिस्ट्रार के पास फाइल करने अथवा तुलनपत्र और खातों पर विचार करने के प्रयोजन के लिए वार्षिक साधारण अधिवेशन करने अथवा कम्पनी अधिनियम 1956 (1956 वा 1) की धारा 159 के अनुसार विहित प्रयोजन का अनुपालन करने की अपेक्षा नहीं रहेगी और इसके पश्चात् उक्त अधिनियम की धारा 285 द्वारा यथा अपेक्षित अन्तरक बैंक के निदेशक मंडल की बैठक की आवश्यकता नहीं रहेगी।

5. आस्थियों का मूल्यांकन और दायित्वों का अव-धारण—अन्तरिती बैंक अन्तरण बैंक के परामर्श से संपत्ति और आस्थियों का मूल्यांकन करेगा और उसकी दायित्वों का आकलन निम्नलिखित उपबन्धों के अनुसार करेगा, अर्थात् :—

(i) (क) सरकारी प्रतिभूतियों से भिन्न अन्य निवेश का विहित तारीख से ठीक पहले विद्यमान बाजार दरों पर मूल्यांकन किया जाएगा। (ख) (1) बैंककारी विनियमन अधिनियम, 1949 की धारा 24 के प्रयोजन के लिए भारतीय रिजर्व बैंक द्वारा जारी अधिसूचना में दिए गए सिद्धांतों के अनुसार सरकारी प्रतिभूतियों का मूल्यांकन निर्धारित तारीख से ठीक पहले दिन की स्थिति में किया जाएगा।

(ii) केन्द्रीय सरकार की वे प्रतिभूतियां जैसे डाकघर प्रमाण पत्र, खजाना जमा बचत प्रमाणपत्रों और अल्प बचत योजना के अधीन जारी बचत निक्षेप प्रमाणपत्र या कोई अन्य प्रतिभूति या प्रमाणपत्र का मूल्यांकन उनके अंकित मूल्य या उस तारीख को नकदी करण मूल्य जो भी उच्चतर हो, पर किया जाएगा।

(iii) जहां जमींदारी उन्मूलन बंधपत्र जैसी किसी सरकारी प्रतिभूति अथवा इस प्रकार की कोई अन्य प्रतिभूति, जिसकी बाबत संदाय किस्तों में किया जाना है, के बाजार मूल्य का अभिनिश्चय नहीं किया जाना है, किसी कारण के लिए उस प्रतिभूति का मूल्यांकन मूलधन की किस्तों और अदा करने के लिए शेष ध्याज इसकी किस्तों के देय रहने की अवधि को ध्यान में रखते हुए उचित समझी

सही रकम पर किया जाएगा। इस बात का भी ध्यान रखा जाएगा कि जिस प्रकार की प्रतिभूति नहीं है उस सरकार द्वारा जारी की गई उसी अवधि के अवधि लगभग उसी अवधि की किसी प्रतिभूति पर प्राप्त रकम कितनी अन्य सुसंगत बातों का भी ध्यान रखा जाएगा।

(ग) जहां किसी प्रतिभूति, अंश डिबेंचर, बंधपत्र या अन्य निवेश का बाजार मूल्य प्रसामान्य कारकों द्वारा प्रभावित होने वाले कारण द्वारा बिचार किया जाता है वहां किसी न्यायोचित अवधि पर इसके औसत बाजार के आधार पर निवेश का मूल्यांकन किया जाएगा।

(घ) जहां किसी प्रतिभूति, शेयर (अंश), डिबेंचर, बंधपत्र या कोई अन्य निवेश, अभिनिश्चित नहीं की जा सकती है, वहां केवल ऐसे मूल्य को, यदि कोई हो, गणना में लिया जाएगा जो जारी कर्ता समनुषंगी की वित्तीय स्थिति, पूर्ववर्ती पांच वर्षों के दौरान इसके द्वारा संदत्त लाभांश और अन्य सुसंगत तथ्यों का ध्यान में रखते हुए उचित समझी गई है।

(ङ) स्थान और सभी अन्य स्थावर संपत्तियां और दावों के समाधान में अर्जित आस्तियां उनके बाजार मूल्य पर मूल्यांकित की जाएंगी।

(च) फर्निचर, और फक्सचर, स्टॉक में लेखन सामग्री और अन्य आस्तियां, यदि कोई हों प्रतियों के अनुसार लिखे गए मूल्य या उचित समझे जा सकने वाले वसूलीय मूल्य पर मूल्यांकित की जाएंगी।

(छ) अग्रिम, जिसमें विक्रय किए गए बिल, बढ़ा बही तथा अन्य आस्तियां की संवीक्षा अंतरिती बैंक और प्रतिभूतियों द्वारा की जाएंगी, जिसमें इसके लिए अंतरिती बैंक द्वारा परोक्षित सत्यापित की जाने वाली धारित गारंटियां हैं; तत्पश्चात अग्रिमों को जिसमें उसके भाग भी हैं वो प्रवर्गों में वर्गीकृत किया जाएगा अर्थात् "अच्छा समझे गये अग्रिम और तत्पर वसूली" तथा तत्पर वसूली के लिए विचार न किए गए अग्रिम और/या डूबंत या संदेहास्पद वसूली।"

(2) अंतरिती बैंक विहित तारीख को "आस्ति खाता" नाम से एक खाता खोलेगा। इस खण्ड के अनुसार तत्पर वसूलनीय आस्ति के रूप में अवधारित आस्ति के मूल्य का प्रतिनिधित्व करने वाली कुल रकम आस्ति खाता में जमा की जाएगी।

(3) (i) जहां विहित तारीख को किसी आस्ति का मूल्यांक अवधारित नहीं किया जा सकता है, वहां यह भारतीय रिजर्व बैंक के अनुमोदन के पश्चात्पूर्वी तारीख को भागतः या पूर्णतः वसूलनीय आस्ति के रूप में समझी जाएगी।

(ii) आस्ति के मूल्यांकन और/या किसी अग्रिम और/या दायित्व के अवधारण के बारे में अंतरिती बैंक और अंतरक बैंक में किसी असहमति की दशा में यह मामला भारतीय रिजर्व बैंक की राय के लिए निविष्ट किया जाएगा परन्तु यह कि जब तक कि कोई इस तरह की राय प्राप्त नहीं हो जाती है, अंतरिती बैंक द्वारा मद या उसके भाग के मूल्यांकन को इस स्कीम के प्रयोजन के लिए अनंतिम रूप से अपनाया जाएगा,

(iii) यदि ऐसा करना आवश्यक दशा में हो तो भारतीय रिजर्व बैंक के लिए ऐसी मदों के मूल्यांकन के सम्बन्ध में जैसा वह उचित समझे, तकनीकी सलाह लेना सक्षम होगा, जो वह आस्तियों की किसी ऐसी मद के मूल्यांकन या दायित्व की किसी ऐसी मद के अवधारण के सम्बन्ध में उचित समझे और ऐसी सलाह प्राप्त करने की लागत अंतरक बैंक की आस्तियों से पूर्ण रूप में संदेय होगी।

(iv) इस स्कीम के प्रयोजनों के लिए दायित्वों में ऐसे सभी आकस्मिक दायित्व सम्मिलित होंगे जिन्हें अंतरिती बैंक विहित तारीख को या उसके पश्चात अपने संसाधनों में पूरा करने के लिए युक्तियुक्त रूप से अपेक्षित करे।

5. पूर्वगामी उपबंधों के अनुसार आस्ति का और दायित्वों का अवधारण बैंक और इसके सदस्य और उसके लेनदारों दोनों पर आवश्यक होगा।

अध्याय-3

लेनदारों और निक्षेपकर्ताओं को संदाय

6. अंतरक बैंक के दायित्व का उन्मोचन (1) निम्न-लिखित की बाबत—

(क) अंतरक बैंक के किसी कर्मचारी द्वारा उस बैंक में कर्मचारीवृन्द प्रतिभूति के रूप में जमा राशि को विहित तारीख तक उस पर उपगत पूर्ण व्याज यदि कोई हो, का संदाय किया जाएगा या उसका उपबंध किया जाएगा ;

(ख) अंतरक बैंक के प्रत्येक दायित्व खाते या चालू खाते या कोई अन्य जमा खाता में जिसमें सावधि निक्षेप, रोकड़ प्रमाणपत्र, मासिक निक्षेप, मांग पर या अल्प मूचन पर संदेय निक्षेप या कोई अन्य निक्षेप, चाहे वह किसी भी नाम से ज्ञात हो, अंतरिती बैंक, विहित तारीख को, अपने धारक (कों) के नाम तत्समान और वैसा ही खाता

खोलेगा और उसमें पूरी राशि का जिसमें इस स्कीम के अर्धीन उस पर संदेय व्याज सीमा तक व्याज सहित जमा करेगा।

परन्तु यह कि अन्तरिती बैंक किसी विशिष्ट खाते में की गई प्रविष्टि को जतना के बारे में व्यक्तिगत शर्त करता है तो रिजर्व बैंक के अनुमोदन से उस खाते में किए जाने वाले जमा को विहित तारीख से तीन मास से अधिक अवधि के लिए रोक सकेगा और इस अवधि के भीतर अन्तरिती बैंक ऐसे खाने में कुछ अतिशेष को अभिविधित करेगा।

(2) पैरा 5 के उपपैरा (4) के अर्धीन अवधारित अन्तरक बैंक के प्रत्येक अन्य दायित्वों की बाबत अन्तरिती बैंक, नेन्दार को ऐसे दायित्व की राशि का जब भी देय हो संदाय करेगा।

(3) किसी व्याज धारी जमा खाता की बाबत अन्तरिती बैंक विहित तारीख तक भारतीय रिजर्व बैंक के निर्देशानुसार लागू दर से व्याज का संदाय करेगा। किसी चालू खाते या किसी गैर व्याजधारी अन्य खाते की बाबत खाता धारक को कोई व्याज संदेय नहीं होगा। 8 सितम्बर, 1993 से विहित तारीख की अवधि के दौरान कोई भी खाता धारक अपने खाते से किसी जमा या अन्य धन के असंदाय पर प्रतिकर का दावा करने का हकदार नहीं होगा।

(4) किसी अभिव्यक्त या विवक्षित संविदा में किसी बात के प्रतिकूल होने हुए भी अन्तरिती बैंक में खोले गए और स्कीम के उपबंधों के अनुसार जमा किए गए खाते में केवल ऐसी दर से जो अन्तरिती बैंक ऐसे खातों के लिए अपने जमाकर्ताओं को सामान्यतया अनुज्ञात करता है विहित तारीख से व्याज का संदाय किया जाएगा।

(5) आस्ति खाता में जमा अतिशेष को इस खण्ड के अर्धीन दायित्व की पूर्ति के लिए अपेक्षित सीमा तक विनियोजित किया जाएगा। यदि आस्ति खाते में अतिशेष पर्याप्त नहीं है तो उस कम राशि को, अन्तरिती बैंक द्वारा खर्च किया गया समझा जाएगा, और उनको उस संभव सीमा तक वसूल किया जाएगा जो स्कीम के पैरा 7 के उप पैरा 2 के खंड (50) में उपबंधित है।

अध्याय 4

7. अंतरक बैंक के अधिकार और दायित्वः—

(1) इस स्कीम के प्रारंभ पर, अंतरक बैंक की समस्त पूंजी और आरक्षित राशि को हूबे हुए और संदेहस्पद ऋणों और अंतरक बैंक की अन्य दायित्वों के अवश्रयन के लिए उपबंध समझा जाएगा।

(2) अंतरक बैंक के प्रत्येक शेयर की बाबत ऐसी राशि जो निम्न खण्ड (ख) के अनुसार में अन्तरिती बैंक द्वारा विहित तारीख के ठीक पूर्व और या भाग पर खाने में संदेय राशि पर, प्रत्येक शेयर धारक द्वारा या उसकी (उनकी) ओर से शेयर पूंजी में समझाया समझी गई थी, संग्रहण खाता समझा जाएगा और उसे अन्तरिती बैंक की लेखा गृहियों में उस रूप में प्रविष्टि किया जाएगा और उसका खाने से निम्नलिखित ढंग से भुगतान किया जाएगा, अर्थात्:—

(क) अन्तरिती बैंक, प्रथमतः ऐसे प्रत्येक व्यक्ति को, जो विहित तारीख को, अंतरक बैंक के आन्वेषित शेयर के धारक के रूप में रजिस्ट्रीकृत था (या बहुतेक प्रकार रजिस्ट्रीकृत होने के लिए पात्र रहा है) ऐसे तारीख से या तारीखों से जो विहित की जाएं, तीन मास की अवधि के भीतर ऐसे शेयर या शेयरों की बाबत उसके द्वारा असंदेय बकाया न मांगी गई राशि था और बकाया मांगी गई राशि का यदि कोई हो, संदाय करने के लिए कहेगा और उसके पश्चात् यदि वह आवश्यक पाया जाता है तो ऐसे प्रत्येक व्यक्ति को, जो विहित तारीख को अंतरक बैंक के किसी साधारण शेयर के धारक के रूप में रजिस्ट्रीकृत था (या इस रजिस्ट्रीकृत होने के लिए पात्र रहा है) ऐसी तारीख से या तारीखों से तीन मास की अवधि के भीतर ऐसे शेयर या शेयरों या मांगे गए अतिशेष यदि कोई हो, की बाबत उसके द्वारा असंदेय अतिशेष का संदाय करने के लिए कहा जाएगा;

(ख) अन्तरिती बैंक मांग के प्रत्येक मामले की परिस्थितियों को ध्यान में रखते हुए उपयुक्त कदम उठाएगा और ऊपर खंड (क) की देय राशियों का, व्यक्तिगत अवधि के लिए उस पर छह प्रतिशत प्रतिवर्ष की दर से व्याज सहित संदाय कराएगा;

(ग) अन्तरिती बैंक अधिमों, क्रय किए गए और भुनाए गए बिलों बहो वट्टों और अन्यान्य ऋणों और अन्य दायित्वों की बाबत जिन्हें तुरंत वसूल न किए जा सकत बाने और/या वसूली के लिए चुके हुए या, संदेहास्पद अधिम समझा गया है या जिन्हें विहित तारीख के पश्चात् पूर्णतः या भागतः वसूल किया जा सकता है, मांग की प्रत्येक मामले की परिस्थितियों को ध्यान में रखते हुए, सभी उपलब्ध कदम उठाएगा और उसका संदाय कराएगा परन्तु यदि ऋण या आस्ति की राशि 50,000 रु. से अधिक हो जाती है, तो अन्तरिती बैंक भारतीय रिजर्व बैंक के अनुमोदन के बिना, (1)

किसी लेनदार या किसी अन्य व्यक्ति से कोई समझौता या व्यवस्था नहीं करेगा अथवा किसी ऐसे ऋण या आस्ति को अपलिखित नहीं करेगा ;
(ii) उसको अन्तरित किसी प्रतिभूति या उसके द्वारा अभिग्रहण की गई आस्ति या विक्रय या अन्यथा लिपटान नहीं करेगा ।

(घ) अन्तरिती बैंक मांग के प्रत्येक मामलों की परिस्थितियों को ध्यान में रखते हुए, इसके अतिरिक्त सभी उपलब्ध कदम उठाएगा और कंपनी अधिनियम, 1956 (1956 का 1) की धारा 45अ और धारा 543 के साथ पठित धारा 45अ के अधीन अन्तरक बैंक के किसी संप्रवर्तक, निदेशक, प्रबंधक या अन्य अधिकारी के विरुद्ध उच्च न्यायालय द्वारा नुकसानी के रूप में अधिनिर्णीत राशि, यदि कोई हो, का भुगतान कराएगा ।

(ङ) अन्तरिती बैंक प्रथमतः खंड (ख), (ग) और (घ) में वर्णित मदों के कारण प्रभावित हुई वसूली को, ऐसी रकम की वसूली के लिए उपगत व्यय के लिए और तत्पश्चात् पैरा 6 के उप पैरा 5 में निर्दिष्ट कमी के लिए विनियोजित कर सकेगी यदि ऐसे विनियोजन के पश्चात् कोई अधिशेष बचता है तो, अन्तरिती बैंक किसी आकस्मिक दायित्व की बाबत रिजर्व बैंक के अनुमोदन से किसी दायित्व चाहे आकस्मिक हो या अत्यांतिक या उसका ऊपर पैरा 4 के अनुसार निर्धारण किया गया हो या नहीं और चाहे उसका विहित तारीख के पश्चात् उद्भूत हुआ हो, या पता चला हो अधिशेष का संदाय करेगा ।

(च) यदि ऊपर खंड (ङ) के अनुसार विनियोजन के पश्चात् कोई अधिशेष बचता है तो, अन्तरिती बैंक, नीचे निर्दिष्ट प्रकार से तथा सीमा तक अन्तरक बैंक के पूर्व शेयर धारकों के खातों में देय रकम यदि कोई हो, उपलब्ध रकम में से यथानुपात संदाय करेगा :—

(i) प्रथमतः अन्तरक बैंक के पूर्व अधिमान शेयर धारकों के खातों में देय रकम यदि कोई हो, सभी खातों में पूर्ण संदाय किए जाने तक संदाय करेगा ।

(ii) दूसरे, अन्तरक बैंक के पूर्व साधारण शेयर धारकों के खातों में देय रकम, यदि कोई हो, सभी खातों में पूर्ण संदाय किए जाने तक संदाय करेगा ।

(iii) तीसरे अन्तरक बैंक के पूर्व आस्थगित शेयर धारकों के खातों में देय रकम, यदि कोई हो, सभी खातों में पूर्ण संदाय किए जाने तक संदाय करेगा, और

(iv) ऊपर उपखंड (i), (ii) और (iii) में वर्णित सारी रकमों का संदाय पूर्ण रूप से कर दिए जाने पर, अन्तरिती बैंक के हाथों में बचे हुए अधिशेषों को यदि कोई हो, अन्तरक बैंक के पूर्व साधारण शेयर धारकों के बीच यथानुपात वितरित किया जाएगा ।

परन्तु यदि कोई प्रश्न उठता है कि ऊपर के किसी खंड में वर्णित खातों में क्या कोई राशि देय है, इसे भारतीय रिजर्व बैंक की निर्णय के लिए निर्दिष्ट किया जाएगा ।

(छ) इस पैरा में निर्दिष्ट संग्रहण खातों की देय रकम इस योजना में उपबंधित की गई सीमा तक केवल अन्तरिती बैंक का दायित्व समझी जाएगी ।

(ज) इस प्रयोजन के लिए विहित तारीख से बारह वर्ष की अवधि की समाप्ति पर या ऐसी पूर्वतर अवधि जिसे केन्द्रीय सरकार भारतीय रिजर्व बैंक के परामर्श करने के पश्चात् विनिर्दिष्ट करे, इस उप पैरा खंड (ग) में निर्दिष्ट कोई भी मद जिसकी उस तारीख बैंक वसूली नहीं की गई है भारतीय रिजर्व बैंक के परामर्श से अन्तरिती बैंक द्वारा मूल्य निकाला जाएगा और अन्तरिती बैंक पैरा 5 के उप पैरा (4) में निर्दिष्ट कमी को पूरा करने के लिए आवश्यक पहले किसी ऐसी रकम से कटौती करने के पश्चात्, उस मूल्यांकन को ध्यान में रखते हुए किसी रकम या रकमों के वितरण को अवधारित करेगा जिसका इस पैरा के उप पैरा (2) के खंड (च) में उपबंधित क्रम में और रीति से उस तारीख तक समाधान हुए बिना रहा हो, अवधारित की गई किसी रकम/रकमों का वितरण करेगा ।

अध्याय 5

अन्तरक बैंक के कर्मचारियों के अधिकार और बाध्यताएं

8. कर्मचारियों की सेवा का बने रहना:—(1) अन्तरक बैंक के सभी कर्मचारी सेवा में बने रहेंगे और अन्तरिती बैंक में उन्हीं पारिश्रमिक तथा सेवा की उन्हीं निबंधनों और शर्तों पर नियुक्त किए गए समझे जाएंगे जो 30 जून, 1995 को कारबार बंद होने के ठीक पहले ऐसे कर्मचारियों के लिए लागू थी ।

परन्तु अन्तरक बैंक के उन कर्मचारियों जिन्होंने केन्द्रीय सरकार के द्वारा मंजूर की गई योजना के ठीक पश्चात् की तारीख के एक मास की समाप्ति के पूर्व किसी भी समय अन्तरिती बैंक या अन्तरक बैंक को लिखित में दी गई सूचना के द्वारा अन्तरिती बैंक के कर्मचारी न बनने के आग्रह की सूचना दी गई हो, औद्योगिक विवाद अधिनियम, 1947 (1947 का 14) के उपबंधों के अधीन और ऐसी पेंशन उपदान, भविष्य निधि और अन्य सेवा निवृत्ति फायदा (फायदे) जो 30 जून, 1995 को कारबार बंद होने के ठीक पहले यथा प्रवृत्त थे, अन्तरिती बैंक के प्राधिकार के नियमों के अन्तर्गत ऐसे प्रतिकर के जो साधारणतया अनुमेय हों, संदाय के लिए हकदार होंगे ।

(2) अन्तरिती बैंक अन्तरक बैंक के उन कर्मचारियों की बाबत जिन्हें अन्तरिती बैंक के कर्मचारियों के रूप में नियुक्ति किया गया समझा गया है, अन्तरिती बैंक की सेवा में रहकर उनकी छटनी किए जाने की दशा में उनके लिए छटनी प्रतिकर का दायित्व अन्तरिती बैंक द्वारा इस आधार पर किया गया समझा जाएगा कि उनकी सेवाएं निरंतर रही हों और अन्तरक बैंक को उनके स्वयंस्तरण द्वारा अवरोधित न की गई हो।

(3) अन्तरिती बैंक उस तारीख से, जिसको स्कीम की मंजूरी दी गई है, तीन वर्ष की अवधि की समाप्ति पर, उप पैरा (1) के अधीन अन्तरिती बैंक में जिनकी सेवाएं जारी है अन्तरक बैंक के कर्मचारियों को सेवा के उन्हीं पारिश्रमिक और उन्हीं निबंधनों एवं शर्तों के जो अन्तरिती बैंक के तत्समान बैंक और प्रास्थिति के कर्मचारियों पर लागू होती है, अन्तरक बैंक के कर्मचारियों की अर्हताएं और अनुभव समान होने की दशा में या अन्तरिती बैंक के ऐसे अन्य कर्मचारियों को अर्हताएं एवं अनुभव के समतुल्य होने पर संदाय करेगा ;

परन्तु इस संबंध में कोई संदेय या मतभेद उत्पन्न होता है कि क्या उक्त कर्मचारियों की अर्हता या अनुभव अन्तरिती बैंक के तत्समान बैंक या प्रास्थिति के अन्य कर्मचारियों की अर्हताएं और अनुभव समान है या उसके समतुल्य है या इस संबंध में अन्तरिती बैंक के वेतनमान में कर्मचारियों के वेतन का निर्धारण के लिए अपनाए जाने वाले सिद्धान्तों की प्रक्रिया के संबंध में, संदेय और मतभेद भारतीय रिजर्व बैंक को निर्देशित किया जाएगा जिसका निर्णय अंतिम होगा।

(4) यथास्थिति अन्तरक बैंक के कर्मचारियों के लिए गठित किसी भविष्य निधि और/या उपदान निधि के न्यासियों या प्रशासकों, अन्तरिती बैंक के लिए गठित कर्मचारी भविष्य निधि और/या उपदान निधि के न्यासियों का अन्तरक बैंक यथाशीघ्र विहित तारीख को या इसके पश्चात या अन्यथा अन्तरिती बैंक के, अन्तरक बैंक के कर्मचारियों के फायदे के लिए न्यास में रखे गए सभी धन और विनिधान को अन्तरित करेगा।

परन्तु पश्चात कथित ऐसे न्यासी विनिधान के मूल्य में किसी कमी या किसी कार्य की बाबत उपेक्षा या स्कीम के प्रारम्भ होने की तारीख से पहले किए गए व्यतिक्रम के लिए दायी नहीं होंगे।

अध्याय - 6

प्रकीर्ण

9. लेनदारों द्वारा मांग :- अन्तरक बैंक का कोई लेनदार अन्तरक बैंक के अन्तरिती बैंक के विरुद्ध कोई मांग करने के लिए या इस स्कीम द्वारा विहित सीमा के सिवाय अन्तरक बैंक उसके किसी भी दायित्व की वास्तव मांग करने का हकदार नहीं होगा।

10. केन्द्रीय सरकार, रिजर्व बैंक, अन्तरिती या अन्तरक बैंक के विरुद्ध विधिक कार्यवाही :- इस स्कीम के अनुसरण में सद्भाव पूर्वक की गई किसी बात करने के आशयित किसी बात के लिए केन्द्रीय सरकार, भारतीय रिजर्व बैंक या अन्तरिती बैंक या अन्तरक बैंक के विरुद्ध कोई वाद या अन्य विधिक कार्यवाही नहीं की जाएगी।

11. अन्तरक बैंक की शाखाओं का पुनर्गठन :- अन्तरिती बैंक अपनी सुविधानुसार अन्तरक बैंक की शाखाओं को एकीकृत करने और/या बंद करने या वर्तमान हानि उठाने वाली शाखाओं का स्थानान्तरण करने का विकल्प रखेगा। तथापि, पूर्वोक्त विकल्प का एक वर्ष की अवधि के भीतर भारतीय रिजर्व बैंक के पूर्व अनुमोदन से अन्तरिती बैंक द्वारा प्रयोग किया जाएगा।

12. विवरणियों और जानकारी का दिया जाना :- अन्तरिती बैंक इस स्कीम के क्रियान्वयन के संबंध में समय समय पर भारतीय रिजर्व बैंक द्वारा यथा अपेक्षित ऐसी विवरणियों और सूचना को भारतीय रिजर्व बैंक को प्रस्तुत करेगा।

13. नोटिस की तामील की रीति :- अन्तरिती बैंक द्वारा दिए जाने वाले नोटिस या अन्य संसूचना को, यदि अन्तरक बैंक की किताबों/बही में लिखे गए पते पर संबोधित और पाने वाले को पूर्व संदत्त साधारण डाक द्वारा भेजा गया है तो सम्यक रूप से तामिल किया गया या भेजा गया समझा जाएगा; जब तक कि अन्तरिती बैंक की बही में नया पता प्रविष्ट नहीं कर दिया जाता है और ऐसी नोटिस को इसके डाक में डालने के पश्चात अड़तालीस घंटों की समाप्ति पर तामिल किया हुआ समझा जाएगा। कोई नोटिस या संसूचना जो साधारण हित की है, को एक या एक से अधिक दैनिक समाचार पत्रों में विज्ञापित किया जाएगा जो उस स्थान पर जहां अन्तरक बैंक अपना कारबार कर रहा था, परिचालन में हो।

[सं. 17/20/93 - बी. ओ. ए. (i)]
एम. एन. प्रसाद, संयुक्त सचिव

MINISTRY OF FINANCE
(Department of Economic Affairs)
(Banking Division)

NOTIFICATION

New Delhi, the 31st December, 1995

S.O. 1010(E).—Whereas on an application made by the Reserve Bank of India under sub-section (1) of section 45 of the Banking Regulation Act, 1949 (10 of 1949) the Central Government has made, under sub-section (2) of that section, an order of moratorium in respect of Kashi Nath Seth Bank Limited, Shahjahanpur, Uttar Pradesh :

And, whereas, during the period of moratorium, the Reserve Bank of India being satisfied that in public interest and in the interest of the depositors it is necessary so to do : in exercise of the powers conferred by sub-section (4) of section 45 of the said Act had prepared a scheme for the amalgamation of the Kashi Nath Seth Bank Limited with the State Bank of India :

And whereas the Reserve Bank of India after having sent the said scheme is draft to the banks concerned in accordance with the provisions of sub-section (6) of the said section and after having considered the suggestions and objections received in regard to the said scheme had modified that scheme and forwarded it to the Central Government for sanction:

Now, therefore, in exercise of the powers conferred by sub-section (7) of section 45 of the said Act, the Central Government hereby sanctions the following scheme in and subject to the terms and conditions hereafter mentioned.

CHAPTER I

Preliminary

1. Short title and commencement.—(1) This scheme may be called the Kashi Nath Seth Bank Limited (Amalgamation with State Bank of India) Scheme, 1995.

(2) It shall come into force on such date as the Central Government may, by notification in the Official Gazette, specify.

2. Definitions.—In this Scheme, unless the context otherwise requires—

(1) "Act" means the Banking Regulation Act, 1949 (10 of 1949);

(2) "Asset Account" means a notional account opened pursuant to sub-paragraph (2) of paragraph 5 of the Scheme for the purpose of ascertaining the surplus or shortfall after the adjustment from time to time of liabilities of the transferor bank as provided in the Scheme;

(3) "Collection Account" means a notional account opened in accordance with paragraph 7 of the Scheme, for the purpose of ascertaining the amount if any, available for distribution to the members of the transferor bank after adjustment of assets and liabilities;

(4) "Prescribed date" means the date which the Central Government may specify under sub-paragraph (2) of paragraph 1;

(5) "Scheme" means the Kashinath Seth Bank Limited (Amalgamation with State Bank of India) Scheme, 1995.

(6) "Transferor Bank" means the Kashi Nath Seth Bank Limited Shahjahanpur, Uttar Pradesh;

(7) "Transferee Bank" means the State Bank of India, constituted under section 3 of the State Bank of India Act 1955;

(8) Words and expressions used herein and not defined but defined in the Act have the meaning respectively assigned to them in the Act.

CHAPTER II

Transfer of business, properties, assets & liabilities

3. Transfer of assets and liabilities and general effect, thereof.—(1) As from the prescribed date all rights, powers, claims, demands, interests, authorities, privileges, benefits, assets and properties of the transferor bank, movable and immovable, including premises subject to all incidents of tenure and to the rents and other sums of money and covenants reserved by or contained in the leases or agreements under which they are held, all office furniture, loose equipments, plant apparatus and appliances, books, papers, stocks of stationery, other stocks and stores, all investments in stocks, shares and securities, all bills receivable in hand and in transit, all cash in hand and on current or deposit account (including money at call or short notice) with bank's bullion, all book debts, mortgage debts and other debts with the benefit of securities, or any guarantee therefor, all other, if any property rights and assets benefit of all guarantees in connection with the business of the transferor bank shall, subject to the other provisions of this scheme, stand transferred to, and become the properties and assets of, the transferee bank; and from the prescribed date all the liabilities, duties and

obligations of the transferor bank shall be and shall become the liabilities, duties and obligations of the transferee bank to the extent and in the manner provided hereinafter.

(2) Without prejudice to the generality of the foregoing provisions, all contracts, deeds, bonds, agreements, powers of attorney, grants of legal representation and other instruments of whatever nature subsisting or having effect immediately before the prescribed date shall be effective to the extent and in the manner hereinafter provided against or in favour of the transferee bank and may be acted upon as if instead of the transferor bank the transferee bank had been a party thereto or as if they had been issued in favour of the transferee bank.

(3) If on the prescribed date any suit, appeal or other legal proceedings of whatever nature by or against the transferor bank is pending, the same shall not abate, or be discontinued or be in any way prejudicially affected, but shall subject to the other provisions of this Scheme, be prosecuted and enforced by or against the transferee bank.

(4) If according to the laws of any country outside India the provisions of this Scheme, by themselves, are not effective to transfer or vest any asset or liability situated in that country which forms part of the underaking of the transferor bank to or in the transferee bank, the affairs of the transferor bank in relation to such assets or liability shall on the prescribed date, stand entrusted to the chief executive officer for the time being of the transferee bank and the chief executive officer may exercise all powers and do all such acts and things as would have been exercised or done by the transferor bank for the purpose of effectively winding up its affairs. The chief executive officer shall take all such steps as may be required by the laws of any such country outside India for the purpose of effecting such transfer or vesting and in connection therewith the chief executive officer may, either himself or through any person authorised by him in this behalf, realise any assets or discharge any liability of the transferor bank and transfer the net proceeds thereof to the transferee bank.

4. Closure of books of the transferor bank and preparation of balance sheet :—(1) The books of the transferor bank shall be closed and balanced and balance sheet prepared in the first instance, as at the close of business on 30th June, 1995 and thereafter as at the close of business on the date immediately preceding the prescribed date and the balance sheet shall be got audited and certified by a chartered accountant or a firm of chartered accountants approved or nominated by the Reserve Bank of India for the purpose.

(2) A copy of the balance sheet of the transferor bank prepared in accordance with the provisions of the foregoing paragraph, shall be filed by the transferor bank with the Registrar of Companies as soon as possible after it has been received and thereafter the transferor bank shall not be required to prepare balance sheets or profit and loss accounts or to lay the same before its members or file copies thereof with the Registrar of Companies or to hold any annual general meeting for the purpose of considering the balance sheet and accounts or for any other purpose or to comply with the provisions of section 159 of the Companies Act, 1956. (1 of 1956), and it shall not thereafter be necessary for the Board of Directors of the transferor bank to meet as required by section 285 of that Act.

5. Valuation of assets and determination of liabilities :—The transferee bank shall, in consultation with the transferor bank, value the property and assets and reckon the liabilities of the transferor bank in accordance with the following provisions, namely :—

(1)(a) Investments other than Government Securities shall be valued at the market rates prevailing on the day immediately preceding the prescribed date.

(b) (i) Government Securities shall be valued as on the day immediately preceding the prescribed date in accordance with the principles laid down in the notification issued by Reserve Bank of India for the purpose of section 24 of the Banking Regulation Act, 1949.

(ii) The Securities of the Central Government such as Post Office Certificates, Treasury Savings Deposit Certificates and any other securities or certificates issued under the small savings scheme of the Central Government shall be valued at their face value or the encashable value as on the said date, whichever is higher.

(iii) Where the market value of any Government security such as the Zamindari Abolition Bonds or other similar security in respect of which the principal is payable in instalments is not ascertainable or is, for any reason, not considered as reflecting the fair value thereof or as otherwise appropriate, the security shall be valued at such an amount as is considered reasonable having regard to the instalments of principal and interest remaining to be paid, the period during which such instalments are payable, the yield of any security issued by the Government to which the security pertains and having the same or approximately the same maturity, and other relevant factors.

(c) Where the market value of any security, share, debenture, bond or other investment is not considered reasonable by reason of its having been affected by abnormal factors, the investment may be valued on the basis of its average market value over any reasonable period.

(d) Where the market value of any security, share, debenture, bond or other investment is not ascertainable, only such value, if any, shall be taken into account as is considered reasonable, having regard to the financial position of the issuing concern, the dividends paid by it during the preceding five years and other relevant factors.

(e) Premises and all other immovable properties and any assets acquired in satisfaction of claims shall be valued at their market value.

(f) Furniture and fixtures, stationery in stock and other assets, if any, shall be valued at the written down value as per books or the realisable value as may be considered reasonable.

(g) Advances, including bills purchased and discounted bank debts and sundry assets, will be scrutinised by the transferee bank and the securities, including guarantees, held as cover therefor examined and verified by the transferee bank. Thereafter the advances, including portions thereof, will be classified into two categories namely, "Advances considered good and readily realisable" and "Advances considered not readily realisable and/or bad or doubtful of recovery".

(2) The transferee bank shall open on the prescribed date an account styled as "asset account". The aggregate amount representing the value of the assets determined as readily realisable assets in accordance with this clause shall be credited to the "asset account".

(3) (i) Where the valuation of any asset cannot be determined on the prescribed date, it may, with the approval of the Reserve Bank of India be treated partly or wholly as asset realisable at a later date.

(ii) In the event of any disagreement between the transferee bank and the transferor bank as regards the valuation of any asset and/or the classification of any advance and/or the determination of any liability, the matter shall be referred to the Reserve Bank of India, for its opinion, provided that until such an opinion is received, the valuation of the item or portion thereof by the transferee bank shall provisionally be adopted for the purpose of this scheme.

(iii) It shall be competent for the Reserve Bank of India in the event of its becoming necessary to do so, to obtain such technical advice as it may consider to be appropriate in connection with the valuation of any such item of asset or determination of any such item of liability, and the cost of obtaining such advice shall be payable in full out of the assets of the transferor bank.

(4) Liabilities for purposes of this scheme shall include all contingent liabilities which the transferee bank may reasonably be expected or required to meet out of its own resources on or after the prescribed date.

3155 GI/95—2.

(5) The valuation of the asset and the determination of the liabilities in accordance with the foregoing provisions shall be binding on both the banks and the members and creditors thereof.

Chapter III

PAYMENT TO CREDITORS AND DEPOSITORS

6. Discharge of liability of the Transferor bank.—(1) In respect of :

- (a) any sums deposited by any employee of the transferor bank with that bank as staff security deposits, together with interests, if any, accrued thereon upto the prescribed date shall be paid or provided for in full;
- (b) every savings bank account or current account or any other deposit account including a fixed deposit, cash certificate, monthly deposit, deposit payable at call or short notice or any other deposit by whatever name called with the transferor bank the transferee bank shall open with itself on the prescribed date a corresponding and similar account in the name of the respective holder(s) thereof crediting thereto full amount including interest to the extent payable under this scheme.

Provided that where the transferee bank entertains a reasonable doubt about the correctness of the entries made in any particular account, it may with the approval of the Reserve Bank withhold the credit to be made in that account for a period not exceeding three months from the prescribed date within which the transferee bank shall ascertain the correct balance in such account.

(2) In respect of every other liability of the transferor bank determined under sub-paragraph (4) of paragraph 5, the transferee bank shall pay to the creditor the amount of such liability as and when they fall due.

(3) In respect of any interest bearing deposit accounts the transferee bank shall pay interest at the rate applicable in accordance with the Reserve Bank of India directives till the prescribed date. In respect of balances in any current account or any other non-interest bearing account no interest shall be payable to the account holder. No account holder shall be entitled to claim any compensation for the non-payment of any deposit or other money from his account during the period from 8th September, 1993 till the prescribed date.

(4) Notwithstanding anything to the contrary contained in any contract, express or implied, interest from the prescribed date shall be paid in respect of the new accounts opened with the transferee bank and credited in accordance with the provisions of the scheme only at such rates as the transferee bank normally allows to its own depositors for such accounts.

(5) The credit balance in the asset account shall be appropriated to the extent required to meet the liability under this clause. If the balance in the asset account is not sufficient, so much of the short-fall shall be treated as amount spent by the transferee bank and to the extent possible, be recovered by it as provided in clause (c) of sub-paragraph 2 of paragraph 7 of the Scheme.

Chapter IV

7. Rights and liabilities of the members of the transferor bank.—(1) On the commencement of this scheme, the entire amount of paid-up capital and reserves of the transferor bank shall be treated as provision for bad and doubtful debts and depreciation in other assets of the transferor bank.

(2) In respect of every share in the transferor bank, the amount which was treated as paid-up towards share capital by or on behalf of each share holder immediately before the prescribed date and/or the amount paid on account of the calls made by the transferee bank in pursuance of clause (b) below shall be treated as a collection account and shall be entered as such in the books of the transferee bank and payable against the account shall be made in the following manner namely :—

- (a) The transferee bank shall, in the first instance, call upon every person who on the prescribed date was registered as the holder of a deferred share in the transferor bank (or would have been entitled to be so registered) to pay within three months from such date or dates as may be specified, the uncalled amount remaining unpaid by him in respect of such share or shares and the calls in arrears, if any and thereafter, if it is found to be so necessary, every person who was, as on the prescribed date, registered as the holder of an ordinary share of the transferor bank (or would have been entitled to be so registered to pay within three months from such date or dates as may be specified, the uncalled amount remaining unpaid by him in respect of such share or shares or the calls in arrears, if any;
- (b) the transferee bank shall take available steps having regard to the circumstances of each case to demand and enforce the payment of the amounts due under clause (a) above together with interest at six per cent. per annum for the period of default;
- (c) the transferee bank shall in respect of the advances, bills purchased and discounted, book debts and sundry debts and other assets, which are classified as "Advances considered not readily realisable and/or bad or doubtful of recovery" or which are or may be realisable wholly or partly after the prescribed date, take all available steps having regard to the circumstances of each case to demand and enforce payment, provided, however, that if the amount of a debt or asset exceeds Rs. 50,000, the transferee bank shall not exceed with the approval of the Reserve Bank of India.
- (i) enter into a compromise or arrangement with the debtor or any other person or write off any such debt or asset.
- (ii) sell or otherwise dispose of any securities transferred to it or any asset taken over by it.
- (d) the transferee bank shall in addition take all available steps having regard to the circumstances of each case to demand and enforce the payment of the amounts, if any, awarded as damages by the High Court against any promoter, director, manager or other officer of the transferor bank under section 45L of the Act, read with section 45H thereof and also with section 543 of the Companies Act, 1956, (1 of 1956);
- (e) the transferee bank may, appropriate the realisations effected by it on account of the items mentioned in clauses (b), (c) and (d) above, in the first instance towards expenses incurred for the recovery of such amount and thereafter towards the shortfall referred to in sub-paragraph (5) of paragraph 6. If any surplus remains after such appropriation, the transferee bank shall make payment or provision in respect of any contingent liability as also with the prior approval of the Reserve Bank, in respect of any liability whether contingent or absolute which was not assessed in terms of paragraph 4 above and has arisen or been discovered after the prescribed date.
- (f) If any surplus remains after the appropriation in terms of clause (e) above, the transferee bank shall, make payments pro-rata from amount if any available towards the amounts, if any, due to the accounts of the former shareholders of the transferor bank in the manner and to the extent specified below:
- (i) in the first place, the amounts, if any, due to the accounts of the former preference shareholders of the transferor bank till payment in full against all the accounts has been made.
- (ii) in the second place, the amount, if any, due to the accounts of the former ordinary shareholders of the transferor bank till payment in full against all the accounts has been made.
- (iii) in the third place, the amounts, if any due to the accounts of the former deferred shareholders of the transferor bank till payment in full against all the accounts have been made; and
- (iv) after all the amounts mentioned in sub-clauses (i), (ii) and (iii) above have been paid in full, the surplus, if any, remaining in the hands of the transferee bank shall be distributed pro-rata among the former ordinary shareholders of the transferor bank:
- Provided that if any question arises whether any amounts are due against an account mentioned in any of the above clauses, it shall be referred to the Reserve Bank of India for its decision.
- (g) the amounts due to the collection accounts referred to in this paragraph shall be deemed to be a liability of the transferee bank only to the extent provided for in this scheme;
- (h) on the expiry of twelve years from the prescribed date or such earlier period as the Central Government after consulting the Reserve Bank of India may specify for this purpose, any items referred to in clause (c) of this sub-paragraph which may not have been realised by that date shall be valued by the transferee bank in consultation with the Reserve Bank of India and the transferee bank shall distribute any amount or amounts determined in the light of that valuation after deducting therefrom first any such amount necessary for meeting the shortfall referred to in sub-paragraph (4) of paragraph 5 which may remain unsatisfied as on that date in the order and the manner provided in clause (f) of sub-paragraph (2) of this paragraph.

Chapter V

RIGHTS AND OBLIGATIONS OF THE EMPLOYEES OF TRANSFEROR BANK

8. Continuation of service of employees.—(1) All the employees of transferor bank shall continue in service and be deemed to have been appointed in the transferee bank at the same remuneration and on the same terms and conditions of service, as were applicable to such employees immediately before the close of business on the 30th June 1995.

Provided that the employees of the transferor bank, who have by notice in writing given to the transferor or the transferee bank at any time before the expiry of one month next following the date on which the Scheme has been sanctioned by the Central Government, intimated their intention of not becoming employees of the transferee bank, shall be entitled to the payment of such compensation, if any, under the provisions of the Industrial Disputes Act, 1947, (14 of 1947) and such pension, gratuity, provident fund and other retirement benefit as may be ordinarily admissible under the rules of authorisation of the transferor bank as in force immediately before the close of business on 30th June 1995.

(2) The transferee bank shall in respect of the employees of the transferor bank who are deemed to have been appointed as employees of the transferee bank, be deemed also to have taken over the liability for them of retrenchment compensation in the event of their being retrenched while in the service of the transferee bank on the basis that their service has been continuous and has not been interrupted by their transfer to the transferee bank.

(3) The transferee bank shall, on the expiry of a period not longer than three years from the date on which the scheme is sanctioned, pay or grant to the employees of the transferor bank whose services are continued in the transferee bank under sub-paragraph (1), the same remunera-

tion and the same terms and conditions of service as are applicable to the employees of corresponding rank or status of the transferee bank subject to the qualifications and experience of the said employees of the transferor bank being the same as or equivalent to those of such other employees of the transferee bank :

Provided that if any doubt or difference arises as to whether the qualifications or experience of any of the said employees are the same as or equivalent to the qualifications and experience of the other employees of corresponding rank or status of the transferee bank or as to the procedure or principles to be adopted for the fixation of the pay of the employees in the scales of pay of the transferee bank, the doubt or difference shall be referred to the Reserve Bank of India whose decision thereon shall be final.

(4) The trustees of administrators of any provident fund and/or gratuity fund constituted for the employees of the transferor bank or as the case may be the transferor bank shall on or as soon as possible after the prescribed date transfer to the trustee of the employees provident fund and/or gratuity fund constituted for the transferee bank, or otherwise as the transferee bank may direct, all the moneys and investments held in trust for the benefit of the employees of the transferor bank :

Provided that such latter trustees shall not be liable for any deficiency in the value of investments, or in respect of any act, neglect, or default done before the date of commencement of the scheme.

Chapter VI

Miscellaneous

9. Demand by Creditors.—No creditor of the transferor bank shall be entitled to make any demand against the transferor bank or the transferee bank in respect of any liability of the transferor bank to him except to the extent prescribed by this scheme.

10. Legal proceedings against Central Government, Reserve Bank, transferee or the transferor bank.—No suit or other legal proceedings shall lie against the Central Government, the Reserve Bank of India or the transferee or the transferor bank for any thing which is in good faith done or intended to be done in pursuance of this Scheme.

11. Reorganisation of branches of transferor bank.—The transferee bank shall have the option of integrating branches of transferor bank according to its convenience and/or close down or shift the existing loss making branches of the transferor bank. The aforesaid option will however, be exercised by the transferee bank with the prior approval of Reserve Bank of India within a period of one year.

12. Furnishing statements and information.—The transferee bank shall submit to the Reserve Bank of India such statements and information as may be required by the Reserve Bank of India from time to time regarding the implementation of this scheme.

13. Manner of service of notice.—Any notice or other communication required to be given by the transferee bank shall be considered to be duly given if addressed and sent by pre-paid ordinary post to the addressee at the address registered in the books of the transferor bank, until a new address is registered in the books of the transferee bank, and such notice shall be deemed to be served on the expiry of forty eight hours after it has been posted. Any notice or communication which is of general interest shall be advertised in addition in one or more daily newspapers which may be in circulation at the places where the transferor bank was transacting its business.

[No. 17/20/93-BOA(i)]

M. N. PRASAD, Jt. Secy.

अधिसूचना

नई दिल्ली, 31 दिसम्बर, 1995

का. मा. 1011(अ) :- बैंककारी विनियमन अधिनियम, 1949 (1949 का 10) की धारा 45 की उपधारा (7) के अनुसरण में केन्द्रीय सरकार, एतद्वारा काशीनाथ सेठ बैंक लिमिटेड (भारतीय स्टेट बैंक में समासेवन) स्वीप, 1995 जिसे उपर्युक्त उपधारा के प्रावधानों के अन्तर्गत केन्द्रीय सरकार द्वारा मंजूरी दे दी गई है, का

(क) 1 जनवरी, 1996 उस तारीख के रूप में, जिस तारीख को पैराग्राफ - 6 को छोड़कर, सभी पैराग्राफ प्रभावी होंगे, और

(ख) 1 फरवरी, 1996 उस तारीख के रूप में, जिस तारीख को पैराग्राफ - 6 प्रभावी होगा।
विनिर्दिष्ट करती है।

[संख्या 17/20/93 - बी. ओ. ए. (ii)]

एम. एन. प्रसाद, संयुक्त सचिव

NOTIFICATION

New Delhi, the 31st December, 1995

S.O. 1011(E).—In pursuance of sub-section (7) of section 45 of the Banking Regulation Act, 1949 (10 of 1949), the Central Government hereby specifies :—

(a) the 1st January, 1996 as the date on which all paragraphs, except paragraph 6, and

(b) the 1st February, 1996 as the date on which paragraph 6,

of the Kashi Nath Seth Bank Limited (Amalgamation with State Bank of India) Scheme, 1995, which has been sanctioned by the Central Government under the provisions of the said sub-section, shall come into force.

[No. 17/20/93-BOA(ii)]

M. N. PRASAD, Jt. Secy.

